

॥ श्री हरि ॥

## गीता-सार

1. सांसारिक मोह के कारण ही मनुष्य 'मैं क्या करूँ और क्या नहीं करूँ' इस दुविधामें फँसकर कर्तव्यच्युत हो जाता है। अतः मोह या सुखासक्ति के वशीभूत नहीं होना चाहिए।
2. शरीर नाशवान् है और उसे जानने वाला शरीर अविनाशी है- इस विवेकको महत्व देना और अपने कर्तव्यका पालन करना- इन दोनों में से किसी भी एक उपायको काम में लाने से चिन्ता-शोक मिट जाते हैं।
3. निष्कामभावपूर्वक केवल दूसरों के हितके लिए अपने कर्तव्यका तत्परता से पालन करनेमात्रसे कल्याण हो जाता है।
4. कर्मबन्धनसे छूटनेके दो उपाय हैं- कर्मोंके तत्वको जानकर निःस्वार्थभावसे कर्म करना और तत्त्वज्ञान का अनुभव करना।

5. मनुष्य को अनुकूल- प्रतिकूल परिस्थितियोंके आनेपर सुखी- दुःखी नहीं होना चाहिए; क्योंकि इनसे सुखी-दुःखी होने वाला मनुष्य संसारसे ऊंचा उठकर परम आनन्दका अनुभव नहीं कर सकता।
6. किसी भी साधनसे अन्तःकरणमें समता आनी चाहिए। समता आए बिना मनुष्य सर्वथा निर्विकार नहीं हो सकता।
7. सब कुछ भगवान ही है- ऐसा स्वीकार कर लेना सर्वश्रेष्ठ साधन है।
8. अन्तकालीन चिन्तनके अनुसार ही जीव की गति होती है। अतः मनुष्य को हरदम भगवान् का स्मरण करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, जिससे अन्तकालमें भगवानकी स्मृति बनी रहे।
9. सभी मनुष्य भगवत्प्राप्तिके अधिकारी हैं, चाहे वे किसी भी वर्ण, आश्रम, सम्प्रदाय, देश, वेश आदिके क्यों ना हो।

10. संसार में जहां भी विलक्षणता, विशेषता, सुन्दरता, महत्ता विद्वता आदि दिखे, उसको भगवानका ही मानकर का भगवानका ही चिन्तन करना चाहिए।
11. इस जगतको भगवानका ही स्वरूप मानकर प्रत्येक मनुष्य भगवानके विराटरूपके दर्शन कर सकता है।
12. जो भक्त शरीर- इंद्रियां- मन -बुद्धिसहित अपने -आपको भगवानके अर्पण कर देता है, वह भगवानको प्रिय होता है।
13. संसार में एक परमात्मतत्व ही जानने योग्य है। उसको जाननेपर अमरता की प्राप्ति हो जाती है।
14. संसार- बन्धनसे छुटने के लिये सत्त्व, रज और तम- इन तीन गुणोंसे अतीत होना जरूरी है। अनन्य -भक्तिसे मनुष्य इन तीनों गुणोंसे अतीत हो जाता है।

15. इस संसारका मूल आधार और अत्यन्त श्रेष्ठ परमपुरुष एक परमात्मा ही है- ऐसा मानकर अनन्य भाव से उनका भजन करना चाहिए।
16. दुर्गुण-दुराचारोंसे ही मनुष्य चोरासी लाख योनियों एवं नरको में जाता है और दुःख पाता है। अतः जन्म- मरणके चक्रसे छूटनेके लिए दुर्गुण- दुराचारों का त्याग करना आवश्यक है।
17. मनुष्य श्रद्धापूर्वक जो भी शुभ कार्य करें उसको भगवानका स्मरण करके, उनके नामका उच्चारण करके ही आरम्भ करना चाहिए।
18. सब ग्रंथोंका सार वेद है, वेदोंका सार उपनिषद है, उपनिषदोंका सार गीता है और गीताका सार भगवानकी शरणागति है। जो अनन्यभावसे भगवानकी शरण हो जाता है, उसे भगवान सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर देते हैं।